

न.प्र.
१०५

१०५१ वा ३ वें पुस्तक

॥ अथ यदूर्जा कवचं लिखते ॥

॥ यह पुस्तक दूर्जा कवच है लिखनी पण्डित ॥
॥ काशी राम ने ॥

पारसी पत्र

१
२
३

161

न
श
प
ति प्रति
म
ह
म
म
म
रिश्वा
मो जन
का

राम

न.प्र.
१०६

१. क.
१

162

श्रीगणेशाय नमः प्रय दुर्गा कवचं लिख्यते ॥
श्रीमार्कण्डेय उवाच ॥ यजुष्य पर भूलो केस ॥
वैरजा करं नृणां यज्ञं कस्य चिदाख्यातं त
मे ब्रूहि पिता महः ॥१॥ श्रीब्रह्मो वाच ॥ असि
गुह्यं तमं विप्र सर्वभूतौ पकारकं देव्या सु
कवचं पुण्यं तच्छृणु स्वमहामुने ॥ २ ॥

न
श
प
ति प्रति
तेम
क
विभा
गजा
पाल
रश्मि
तेजन
यका

राम

न.प्र.
१०५

163

१२

परम स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभं प्रा
प्नोति पुरुषो नित्यं महा माया प्रसादतः ॥ ५५ ॥
इति बासह पुराणे हरि हर ब्रह्मा विर
चित्ते द्यया कवचं समाप्तं शुद्धं भूयार

ॐ ॥ ५५ ॥

॥ पण्डित काशी राम जी वाडी ॥

वर्ष १३३९

न
श
प
ति
प्रति
तेम
क
वेमा
गगा
वाल
रश्मा
गेजन
यका

१२

राम

न.प्र.
१०५

164

चं कामदं भुवे जपेत्स प्रशती चंडी कृत्वा
तु क वचं पुरा ॥ ५३ ॥ निर्विघ्नेन भवेत्सि
द्धि चंडी जप समुद्र वा या वद्भू संदो
धने स शैल वन काननं ५४ ॥ तान्तिष्ट
ति से दिन्यां ततिः पुत्र पौत्र कै दे हा ते तं
सं

न
श
प
ति
प्रति
तेम
क
तेभा
गाल
रिश्वा
तेजन
का

रान